

DPN 6214

Title : (~~ज्योतिष ग्रन्थ~~) / (JYOTISAGRAVTHA)

Run. No. 6905

Cat. No.

Micro. No.

Subject ज्योतिष / Astrology

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 15.2 x 7.5

Folios 7

Lines (in a page , 8/9/10/

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

शिवरत्न स्थापित

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : ~~fine~~ / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

इति ग्रहनाम समाप्तः ॥

लिप्याली : ग्रह पूजा जर्जन धनः नेपाल
मार्गः /

Remark : work materials requisites
for Planets worship .

कवनिगदति॥ **वृ** ॥ वृक्षत्रयसूताद्व्यात्रिध्वंशवृजितस्तथा कृमात्रात्रात्रयः
 श्रुतात्राघूयतात्रेवत्र॥ **वृ** ॥ वृक्षमन्त्रीसमाचार्यशुभ्रहीववदस्यतिर्जुनित्रात्र
 मद्राष्ट्रिवागीध्वत्रवर्षीयति॥ **वृ** ॥ वृक्षगुणादेवमन्त्रीवर्षीयताध्वमन्त्रीवर्षीयता
 तउहात्राष्ट्रवकायहुकदेव्यगुनूक्तथा॥ **वृ** ॥ वृक्षमन्त्रीवर्षीयताध्वमन्त्रीवर्षीयता
 यमैतस्तथा मन्त्रीवर्षीयताध्वमन्त्रीवर्षीयता॥ **वृ** ॥ वृक्षमन्त्रीवर्षीयताध्वमन्त्रीवर्षीयता
 त्रार्द्राष्ट्रवर्षीयताध्वमन्त्रीवर्षीयता॥ **वृ** ॥ वृक्षमन्त्रीवर्षीयताध्वमन्त्रीवर्षीयता
 त्रिध्वमन्त्रीवर्षीयताध्वमन्त्रीवर्षीयता॥ **वृ** ॥ वृक्षमन्त्रीवर्षीयताध्वमन्त्रीवर्षीयता

खर्बू गस्तु सवाह सखडा

यधिया॥तयू जा वाकू कूड

आयया॥तायू वाय माकू नयसाक

तजया॥कादू भय वासू माय

वायूया॥वाडू मयीं वाडू जायया

आयया॥हाकू वत्रा खायू खंडन

मवतहानयूसू यंतसदूयासाय॥नववन कूदयक कादू मिसावा

ख जातक काय वृद्धिहानयंतशत्रुमययूत काया कवयकवासा
व वाखवखजास काव ८थुनाथशयित जूद कात्री कोय कडुककड
द॥ ॥यदहादंयया कूसवातयायया॥वासववातित थीनशयी
वा॥कययारंतुति सुधीनशयू॥यद्रतद्वधनित दुःखिशयू॥सुन
तानतंतंय वातमरुयू॥मरिंयनूग मत्रहशयू॥स्त्रीनक मयोन
कहा यासहोगशयू॥स्त्रीनक मयोन सवायू॥यसूकूतं दुःखारिंद
दुदयतवतित ॥नकूगयारिंद या० नवतित॥उवाटनया मरिं

हृदयवतिव ॥ गवतंमहिमं वृद्धाद्युतवति ॥

कृष्णवरादिषीवेव नृनाम्नवदसुधधतिवराकृष्णामराजुलिम्भ
यामिसुध ॥ यद्यकं वलितकिं वितविकान् कृष्णकारवरा ॥ माहृदय
विगातीयाकृष्णवक्रामिलकृते ॥ योजायमुदितो ॥ सर्वेतिस्मिंसागविव
कृति ॥ सन्धिकृद्भक्तिनागाती सुहृदं धार्मिकारुवरा ॥ समूहामागध
येव मधयदसुधयेवव ॥ कूलकृष्णमममं च धार्मिकधार्मिक ॥ येवव

॥ वराद(ह)वितव्यकितस्मिन्त्यातद्वर्तनै ॥ माहृदयमधुलरुही ॥ ॥
स्त्रादिल्यादि ॥ स्वातन्त्र्य ॥ मावासा ॥ काहृकाय सुयसिमरा स्मन्तयिनाय
चन्द्रया ॥ लयुमान ॥ हारव ॥
युगात्र ॥ युका ॥ धृता ॥ स्मन्तयिनाय
वृधया ॥ वृयका ॥ लु ॥ तानायन
वृधया ॥ तका ॥ क्कामकायन ॥ यगुनिधय
एकया ॥ कनयुन ॥ मरा ॥
धार्मिक ॥ मास ॥ कयगुनसावा ॥ जीध
नाकृया ॥ मास ॥ नयासावरा ॥ मदीकान
काहुया ॥ कावरा ॥ वावरा ॥ कनय

अश्विनिया ॥ सत्रवादाना ॥ देवजात ॥ सत्रासल
 रुद्रनिया ॥ धृतरवादाना ॥ मनुष्यजात ॥ किंनि
 कुलिकया ॥ अश्विनिकृत ॥ नाक्षत्र ॥ वात्रासल
 लोहितनया ॥ काचित्रमा ॥ मनुष्य ॥ नागसल
 समुगसित्र ॥ वरावादाना ॥ देवजात ॥ नागसल
 आद्याया ॥ विवादाना ॥ मनुष्यजात ॥ शिवाम
 यतेवसे ॥ यत्रभूत ॥ देवजात ॥ रुद्रिसल
 यषया ॥ धनकत्रम ॥ देवजात ॥ वात्रासल
 अश्विनिया ॥ देववादाना ॥ नाक्षत्र ॥ रुद्रिसल

मधया ॥ महावादाना ॥ नाक्षत्रजात ॥ वृषसल
 यषया ॥ लोहितवादाना ॥ मनुष्य ॥ वृ
 उरुत्रसन्धु ॥ लोहित ॥ मनुष्य ॥ मा
 लोहितया ॥ किंनिवादाना ॥ देवजा ॥ मध
 विवाद्या ॥ वृषसल ॥ नाक्षत्र ॥ धूमसल
 लोहितया ॥ धृतरवादाना ॥ देव ॥ मध
 विवाद्या ॥ रुद्रिवादाना ॥ नाक्षत्र ॥ धूमसल
 अश्विनार ॥ देववादाना ॥ देव ॥ वरा
 अश्विनया ॥ काचित्र ॥ नाक्षत्र ॥ वात्रा

5

10

5

ॐ कौशिकः यत्र कः शुभः तत्र खेदे दानि विष्णु वा यो न ह्यन्यथा ॥
 गो (ध) मे वा ऊ तं उ अ ना वा ही नं उ मो ला सा
 न न स स न न न न स स न न न न स स
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 गो गो विष्णु मे शुभं शुभं ल दनि शुभं शुभं कः शुभं न ह्यन्यथा
 (ध) मे वा ऊ तं उ अ ना वा ही नं य मो ला सा गो
 न न न न स स न न न न स स न न न न
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

ॐ शमः वा य द्यं ना न दनि शुभं शुभं ल यी न वा शुभं शुभं ॥
 मे वा ऊ तं उ अ ना वा ही नं य मो ला सा गो (ध) मे
 स स न न न न स स न न न न स स न न
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 गो गो शुभं नि सा ना म ऊ य मा दं ना म शुभं शुभं ल यी दं
 वा ऊ तं उ अ ना वा ही नं य मो ला सा गो (ध) मे
 न न स स न न न न स स न न न न स स
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

15

सोमशुभनक्षत्रयुगगगलदतिमुनिवायानिसि
 उ न नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु
 न न न न स स न न न न स स न न न न
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 नकेयुमनक्षत्रयुगयुगलयदंष्ट्र ४ खत्रायत्रकी ॥
 उ न नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु
 स स न न न न स स न न न न स स न न
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

10

5

सोमशुभनक्षत्रयुगयुगलयदंष्ट्र ४ खत्रायत्रकी ॥
 उ न नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु
 न न स स न न न न स स न न न न स स
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 दायाशुभेदिसुभदतिगनप्रतीयदनाहययाद
 उ न नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु नु
 न न न न स स न न न न स स न न न न
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

0

CMS

5

10

15

20

2

[illegible][illegible]

